REVIEW OF RESEARCH
ISSN: 2249-894X
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF)
VOLUME - 12 | ISSUE - 5 | FEBRUARY - 2023

भारत-मलेशिया आर्थिक साझेदारी: चुनौतियाँ एवं संभावनाएँ

डॉ. प्रमोद कुमार
सहायक प्राध्यापक, राजनीति विज्ञान विभाग,
एल.एन.एम.एस कालेज वीरपुर, सुपौल.

सारांश :

भारत और मलेशिया के बीच ऐतिहासिक संबंध रहे हैं। राजनीतिक, आर्थिक और सामाजिक क्षेत्र में दोनों देशों ने आपसी समझ और सहयोग का दृष्टिकोण अपनाया है।[1] भारत की विदेश नीति मजबूत वैश्विक भूमिका की तलाश और चीन के प्रभाव के बीच भारत-प्रशांत क्षेत्रीय परिदृश्य को देखते हुए, कुआलालंपुर के साथ संबंधों पर ध्यान केंद्रित कर रही है। मलेशिया आसियान के साथ भारत के व्यापार को बढ़ाने, भारत की एक्ट ईस्ट नीति के साथ जुड़ने, मलक्का जलडमरूमध्य और दक्षिण चीन सागर में समुद्री कनेक्टिविटी को आगे बढ़ाने और आसियान के इंडो-पैसिफिक इनिशिएटिव का समर्थन करने में महत्वपूर्ण स्थान रखता है।

मूल शब्द : विदेश नीति, आसियान, द्विपक्षीय संबंध, निवेश, अंतर्राष्ट्रीय सहयोग

प्रस्तावना :

मलेशिया दक्षिण पूर्व एशिया में स्थित एक उष्णकटिबंधीय देश है। यह मलय सागर से दो भागों में विभाजित है। मलय सागर प्रयदीप पर स्थित मुख्य भूमि के पश्चिमी तट पर मलक्का जलडमरूमध्य और इसके पूर्व तट पर मलय सागर है। देश का दूसरा हिस्सा, चीन से लगे उत्तरी मलय सागर में बोर्नियो द्वीप के उत्तरी भाग पर स्थित है। मलय प्रायद्वीप पर स्थित कुआला लंपुर देश की राजधानी है। संघीय राजधानी को पुत्रजया में स्थानांतरित कर दिया गया है। यह 13 राज्यों से बनाया गया एक संघीय राज्य है।

भारत – मलेशिया संबंधों का इतिहास :

मलेशिया, भारत तथा चीन के बीच प्राचीन काल से व्यापारिक केंद्र था। जब यूरोपीय लोग इस क्षेत्र में आए तो उन्होंने मलक्का को महत्वपूर्ण व्यापार बंदरगाह बनाया। कालांतर में मलेशिया ब्रिटिश साम्राज्य का एक उपनिवेश बन गया। भारत और मलेशिया के बीच राजनीतिक और सांस्कृतिक संबंधों का पुराना इतिहास है। मलेशिया 31 अगस्त 1957 को मलाया संघ के रूप में स्वतंत्र हुआ और तत्पश्चात औपनिवेशिक शासन के अंत के बाद भारत और मलेशिया के बीच कूटनीतिक संबंधों की शुरुआत हुई।[2]

भारत और मलेशिया दोनों देश आर्थिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक और रणनीतिक मोर्चो पर निरंतर आगे बढ़ने का प्रयास कर रहे हैं। दोनों देश विभिन्न अंतरराष्ट्रीय मंचों पर भी सहयोग एवं समन्वय की भावना के साथ आगे बढ़ते हुए दिखाई दे रहे हैं। भारत- चीन युद्ध 1962 के समय मलेशिया ने भारत का समर्थन किया। 1965 के इंडोनेशिया- मलेशिया विवाद में भारत ने मलेशिया का साथ दिया। भारत हमेशा गुटनिरपेक्ष आंदोलन में मलेशिया की सक्रिय भूमिका का समर्थन करता रहा है 1993 में रक्षा सहयोग के द्विपक्षीय समझौते पर हस्ताक्षर के बाद दोनों देशों के बीच उच्च स्तरीय यात्राओं और वार्ताओं का दौर शुरू हुआ। पिछले कुछ दशकों में, सामयिक चुनौतियों के बावजूद, दोनों देशों ने रक्षा, राजनीति, आर्थिक और संसदीय आदान-प्रदान में स्थिर सहयोग बनाए रखा है। 2010 से बहुआयामी संबंधों को बढ़ावा देने के लिए एक व्यापक रूपरेखा अपनाई गई। विदेश मंत्रालय के परामर्श ढांचे, 2011 में "भारत-मलेशिया संसदीय मैत्री समूह" की स्थापना, संयुक्त आयोग की बैठकें (जेसीएम), विविध व्यवसाय-केंद्रित समझौता ज्ञापन, 1993 रक्षा सहयोग समझौता ज्ञापन, समर्थन के लिए भारत की प्रतिबद्धता जैसे तंत्र 2022 में मलेशिया, दक्षिण चीन सागर और हिंद महासागर में नेविगेशन और सुरक्षा में सहयोग, भारत-मलेशिया रक्षा सहयोग बैठक (एमआईडीकॉम), और आतंकवाद और अन्तर्राष्ट्रीय अपराधों से निपटने पर संयुक्त कार्य बल ने भू-राजनीतिक और राजनीतिक संबंधों को काफी मजबूत किया है।

भारत और मलेशिया के बीच व्यापार:

मलेशिया आसियान क्षेत्र में भारत का तीसरा सबसे बड़ा व्यापारिक भागीदार है, जबकि भारत दक्षिण पूर्व एशिया में मलेशिया का सबसे बड़ा व्यापारिक भागीदार है। 2021 में, भारत ने मलेशिया को 6.63 बिलियन अमेरिकी डॉलर का निर्यात किया [3], जबकि उसी वर्ष मलेशिया का भारत को कुल निर्यात 11.4 बिलियन अमेरिकी डॉलर था। 2022 तक, भारत को मलेशिया का निर्यात बढ़कर 12.42 बिलियन अमेरिकी डॉलर हो गया।

2022 में मलेशिया से भारत को प्राथमिक निर्यात में पशु और वनस्पति वसा और तेल, क्लीवेज उत्पाद (3.61 बिलियन अमेरिकी डॉलर), खनिज ईंधन, तेल, आसवन उत्पाद (1.59 बिलियन अमेरिकी डॉलर), इलेक्ट्रिकल और इलेक्ट्रॉनिक उपकरण (1.53 बिलियन अमेरिकी डॉलर), मशीनरी शामिल थे। परमाणु रिएक्टर, बॉयलर (US$828.74 मिलियन), कार्बनिक रसायन (US$684.35 मिलियन), प्लास्टिक (US$533.96 मिलियन), विविध रासायनिक उत्पाद (US$452.90 मिलियन), कॉपर (US$320.80 मिलियन), ऑप्टिकल, फोटो, तकनीकी, चिकित्सा उपकरण (264.98 मिलियन अमेरिकी डॉलर), लोहा और इस्पात (254.64 मिलियन अमेरिकी डॉलर), कांच और कांच के बर्तन (231.73 मिलियन अमेरिकी डॉलर) इत्यादि।

दूसरी ओर, 2022 में मलेशिया को भारत का निर्यात 7.19 बिलियन अमेरिकी डॉलर था।[4] भारत द्वारा मलेशिया को निर्यात की जाने वाली प्राथमिक वस्तुओं में खनिज ईंधन, तेल, आसवन उत्पाद (US$1.74 बिलियन), एल्युमीनियम (US$597.26 मिलियन), कार्बनिक रसायन (US$589.71 मिलियन) इत्यादि।

विश्व की पांचवीं सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था के रूप में भारत की प्रमुखता, 5 ट्रिलियन अमेरिकी डॉलर के प्रतिष्ठित लक्ष्य की ओर बढ़ते हुए, इसकी पर्याप्त आबादी, तकनीकी प्रगति और विविध औद्योगिक परिदृश्य के साथ मिलकर, कुआलालंपुर से भारतीय बाजार की ओर महत्वपूर्ण ध्यान आकर्षित किया है।

औद्योगिक और सेवा दोनों क्षेत्रों में निवेश की संभावनाएं, तेजी से बढ़ता ऑटोमोबाइल उद्योग और मलेशिया में भारतीय फार्मास्यूटिकल्स को बढ़ावा देना निवेश आकर्षित करने और व्यापार क्षितिज को व्यापक बनाने के प्रमुख केंद्र बिंदु रहे हैं। कई समझौतों और पहलों ने द्विपक्षीय निवेश को सुविधाजनक बनाया है, विशेष रूप से 1997 का द्विपक्षीय निवेश संवर्धन समझौता और संयुक्त आयोग बैठक (जेसीएम)। उच्च शिक्षा, प्रदर्शन प्रबंधन, परियोजना वितरण और सरकारी कार्यक्रम निगरानी से जुड़े समझौते आपसी निवेश को बढ़ावा देने में सहायक रहे हैं। 2011 से मलेशिया और भारत के बीच सीईसीए (व्यापक आर्थिक सहयोग समझौता) और 2015 से भारत और आसियान के बीच व्यापार और निवेश पर एफटीए (मुक्त व्यापार समझौता) ने व्यापार और निवेश प्रक्रियाओं को काफी सुव्यवस्थित किया है।

निवेश परिदृश्य

भारत में 28वें सबसे बड़े निवेशक के रूप में स्थान पाने वाले कुआलालंपुर में अप्रैल 2000 से 2022 तक कुल लगभग 1.15 बिलियन अमेरिकी डॉलर का प्रत्यक्ष विदेशी निवेश (एफडीआई) प्रवाह देखा गया है। संयुक्त उद्यमों सहित लगभग 70 मलेशियाई कंपनियों ने भारत में परिचालन स्थापित किया है। बुनियादी ढांचे, दूरसंचार, तेल और गैस, बिजली संयंत्र, पर्यटन और मानव संसाधन जैसे विविध क्षेत्रों पर ध्यान केंद्रित करना। भारत में मलेशियाई निवेश 7 बिलियन अमेरिकी डॉलर तक पहुंचने का अनुमान है, जिसमें दूरसंचार सबसे महत्वपूर्ण निवेश है। इसके बाद ईंधन, सड़क और राजमार्ग हैं। अपोलो हॉस्पिटल्स और यस बैंक जैसी प्रमुख मलेशियाई कंपनियों ने भारतीय बाजार में उल्लेखनीय प्रवेश किया है, जबकि मलेशियाई निर्माण कंपनियों की भारत में प्रमुख उपस्थिति है, जो मलेशिया के बाहर सबसे बड़ा केंद्र है। इसके विपरीत, शीर्ष आईटी कंपनियों सहित 150 से अधिक भारतीय कंपनियों ने मलेशिया में खुद को स्थापित किया है, जो विशेष रसायन, कपड़ा उत्पादन, स्वास्थ्य देखभाल, फार्मास्यूटिकल्स, आईटी, शिक्षा, फर्नीचर और जैव प्रौद्योगिकी जैसे विभिन्न क्षेत्रों में भाग ले रही हैं।[5]

भारत और मलेशिया के बीच सहयोग के प्रमुख क्षेत्र

ऊर्जा

ऊर्जा बुनियादी ढांचे के लिए निवेश आकर्षित करते हुए बढ़ती ऊर्जा मांगों को पूरा करने से भारत और मलेशिया के बीच गहरे सहयोग को बढ़ावा मिला है। ऊर्जा क्षेत्र में सहयोग में पर्याप्त प्रगति देखी गई है, जिस पर 2012 के नवीकरणीय ऊर्जा सहयोग ज्ञापन और नवीकरणीय ऊर्जा पर संयुक्त कार्य समूह द्वारा जोर दिया गया है।

विशेष रूप से, द्विपक्षीय व्यापार, विशेष रूप से तेल और गैस जैसे जीवाश्म ईंधन में, महत्वपूर्ण बना हुआ है। हालाँकि, नवीकरणीय ऊर्जा पर ध्यान बढ़ रहा है। मलेशियाई कंपनी पेट्रोन की हालिया घोषणा से भारत में नवीकरणीय ऊर्जा और हरित अमोनिया उद्यमों में लगभग 4.5 बिलियन अमेरिकी डॉलर के नियोजित निवेश का पता चलता है।

पर्यटन और प्रवासी

पिछले दो दशकों में, पर्यटन भारत और मलेशिया के बीच संबंधों को बढ़ावा देने में आधारशिला रहा है।[6] राजनयिक और आधिकारिक पासपोर्ट धारकों के लिए भारत-मलेशिया वीजा छूट, 2010 में एक पर्यटन-केंद्रित समझौता ज्ञापन, 2009 में रोजगार और श्रमिकों के कल्याण पर एक द्विपक्षीय समझौता और 2017 में एक संशोधित हवाई सेवा समझौते सहित विभिन्न समझौतों ने महत्वपूर्ण रूप से काम किया है। राष्ट्रों के बीच पर्यटन के विकास में योगदान दिया।

मलेशिया भारतीय मूल के दुनिया के सबसे बड़े समुदायों में से एक है, जिसमें लगभग 2.77 मिलियन लोग शामिल हैं, जो मलेशिया की आबादी का लगभग 8.5 प्रतिशत है। इसके अतिरिक्त, 140,000 से अधिक भारतीय अप्रवासी मलेशिया में रहते हैं, जिनमें विभिन्न क्षेत्रों के पेशेवर और कर्मचारी शामिल हैं। यह भारतीय प्रवासी दोनों देशों के बीच व्यापार नेटवर्क के विस्तार और संचार चैनलों को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

भारत और मलेशिया के बीच पर्यटक आदान-प्रदान पर्याप्त रहा है। 2019 में, भारत ने मलेशिया से लगभग 3.35 मिलियन पर्यटकों का स्वागत किया, जबकि लगभग 7.35 मिलियन भारतीय पर्यटकों ने मलेशिया का दौरा किया। कोविड-19 महामारी की शुरुआत से पहले, दोनों देशों के बीच 210 से अधिक साप्ताहिक उड़ानों द्वारा द्विपक्षीय पर्यटन को अच्छा समर्थन प्राप्त था। महामारी से उत्पन्न चुनौतियों के बावजूद, भारत और मलेशिया के बीच पर्यटन विकास को पुनर्जीवित करने और बढ़ाने के प्रयास जारी हैं।

प्रौद्योगिकी और चिकित्सा

भारत के मजबूत डिजिटल बुनियादी ढांचे ने एक संपन्न स्टार्टअप पारिस्थितिकी तंत्र के लिए मार्ग प्रशस्त किया है, जिसमें लगभग 75,000 स्टार्टअप हैं। कुआलालंपुर भारत की तकनीकी शक्ति को स्वीकार करता है और इसकी क्षमताओं के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण रखता है। भारत और मलेशिया के बीच फार्मास्युटिकल क्षेत्र में सहयोग लगातार आगे बढ़ रहा है।

मलेशियाई बाजार 100 से अधिक भारतीय आईटी कंपनियों की मेजबानी करता है। दोनों देश विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी और स्टार्टअप क्षेत्र के भीतर घनिष्ठ सहयोग को बढ़ावा देने पर सहमत हुए। भारत ने अपने डिजिटल भुगतान नेटवर्क के विस्तार में पर्याप्त प्रगति की है। नई दिल्ली और कुआलालंपुर राष्ट्रीय मुद्राओं का उपयोग करके व्यापार करने के लिए एक रूपरेखा को मजबूत कर रहे हैं और व्यापक आर्थिक सहयोग समझौते (सीईसीए) की समीक्षा के लिए एक प्रक्रिया शुरू की है। इस समीक्षा में इलेक्ट्रॉनिक्स, सेमीकंडक्टर, नई तकनीक और फिनटेक जैसे नए क्षेत्रों की खोज शामिल है।

इसके अलावा, तकनीकी सहयोग और उच्च शिक्षा क्षेत्र में उल्लेखनीय प्रगति चल रही है, जिसका उदाहरण मलेशियाई तकनीकी सहयोग कार्यक्रम (एमटीसीपी) और भारतीय तकनीकी और आर्थिक सहयोग कार्यक्रम (आईटीईसी) के बीच बढ़ता सहयोग है। ये पहल आपसी विकास और उन्नति के लिए अपने तकनीकी और शैक्षिक संबंधों को मजबूत करने के लिए दोनों देशों की प्रतिबद्धता को दर्शाती हैं।

खाद्य सुरक्षा और कृषि

हाल के वर्षों में कृषि और खाद्य सुरक्षा में सहयोग मजबूत हुआ है, जिससे रणनीतिक वस्तुओं तक व्यापक पहुंच की सुविधा मिली है और खाद्य उत्पाद निर्यात बाजारों का विस्तार हुआ है। गैर-बासमती सफेद चावल के निर्यात पर भारत के पूर्व प्रतिबंध और मलेशिया के पाम तेल आयात प्रतिबंध को हटाने के बावजूद, भारत और मलेशिया ने भारत से मलेशिया को 100,000 टन चावल के निर्यात की अनुमति देने वाला एक महत्वपूर्ण व्यापार समझौता किया है।

स्थानीय मुद्राएँ

नई दिल्ली और कुआलालंपुर ने व्यापार संबंधों को मजबूत करने के इरादे को दर्शाते हुए भारतीय रुपये में व्यापार निपटान करने पर सहमति व्यक्त की है। स्थानीय मुद्राओं का उपयोग फायदेमंद हो सकता है, खासकर छोटे और मध्यम आकार के उद्यमों (एसएमई) के लिए जो मुद्रा के उतार-चढ़ाव को कम करना चाहते हैं।

रक्षा और सुरक्षा

भारत और मलेशिया के बीच रक्षा संबंधों में लगातार विस्तार हुआ है, जो 1993 में रक्षा सहयोग ज्ञापन पर हस्ताक्षर, नियमित रक्षा सहयोग बैठकें[7], संयुक्त सैन्य अभ्यास और 18 नए भारतीय हल्के लड़ाकू जेट प्राप्त करने में मलेशिया की रुचि से चिह्नित है, जो हथियारों के व्यापार में संभावित वृद्धि का संकेत देता है।

चुनौतियाँ एवं संभावनाएँ

भारत और मलेशिया के बीच व्यापार परिदृश्य को कुछ चुनौतियों का सामना करना पड़ता है जो संभावित रूप से भारत और मलेशिया के बीच चल रही आर्थिक गति को बाधित कर सकती हैं। वैश्विक मांग में ठहराव की संभावना और बढ़े हुए आयात शुल्क के साथ-साथ प्रतिकूल भू-राजनीतिक बदलाव महत्वपूर्ण बाधाएँ पैदा करते हैं। हालाँकि, इन चुनौतियों के बावजूद, दोनों देशों के बीच मजबूत व्यापार संबंध कायम रहने की संभावना है।

इन चुनौतियों के बीच, भारत और मलेशिया एक उन्नत रणनीतिक साझेदारी की ओर आगे बढ़े हैं, जो राष्ट्रमंडल, एनएएम, जी-15 और जी-77 जैसे प्रमुख वैश्विक मंचों में सदस्यता साझा कर रहे हैं, जो आपसी सहयोग के लिए एक मजबूत आधार बनाते हैं।[8]

द्विपक्षीय संबंधों को और मजबूत करने के अनेक अवसर मौजूद हैं। दोहरे कराधान की रोकथाम, आपसी सीमा शुल्क सहायता, हवाई कनेक्टिविटी में वृद्धि और एयरलाइंस के बीच सहयोग जैसी पहल व्यापार और पर्यटन में आर्थिक विकास को काफी हद तक बढ़ा सकती हैं। इसके अतिरिक्त, गतिशील प्रवासी, लगातार जीडीपी वृद्धि, चीन की तुलना में युवा आबादी, प्रत्यक्ष विदेशी निवेश (एफडीआई) में वृद्धि की उम्मीदें और तेजी से डिजिटलीकरण जैसे कारक भविष्य में आपसी व्यापार संभावनाओं को बढ़ाने के लिए अच्छे हैं।

12 साल के अंतराल के बाद भारत-मलेशिया संयुक्त आयोग की बैठक का हालिया पुनरुद्धार द्विपक्षीय सहयोग के प्रति पुनर्जीवित प्रतिबद्धता को दर्शाता है। मलेशिया-भारत व्यापक आर्थिक साझेदारी समझौते (MICECA) में आगामी संशोधन, नए आर्थिक क्षेत्रों को शामिल करते हुए, अगले तीन वर्षों के भीतर 25 बिलियन अमेरिकी डॉलर की व्यापार मात्रा हासिल करने

की महत्वाकांक्षा के अनुरूप है। उभरते क्षेत्रों में अवसरों की खोज, व्यापार पोर्टफोलियो में विविधता लाना और पारस्परिक रूप से लाभप्रद सहयोग को बढ़ावा देना न केवल 2027 तक दुनिया की तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बनने के भारत के लक्ष्य का समर्थन करता है बल्कि आसियान के साथ भारत के एकीकरण को भी गहरा करता है।

अध्ययन का उद्देश्य:

- प्रस्तावित शोध का उद्देश्य भारत-मलेशिया आर्थिक साझेदारी को रेखांकित करना है
- प्रस्तुत शोध का उद्देश्य आसियान क्षेत्र में भारत की मजबूत उपस्थिति को चिन्हित करना है।
- दक्षिण-पूर्व एशिया में व्यापार एवं निवेश की गति को बढ़ाना है।

शोध पद्धति :

प्रस्तुत शोध अध्ययन द्वितीय स्रोतों के माध्यम से ऐतिहासिक, विश्लेषणात्मक, तुलनात्मक एवं नवीन पद्धतियों को अपनाते हुए शोध को मौलिकता प्रदान करने का प्रयास किया गया है। इस शोध कार्य हेतु आवश्यक सामग्री विदेश मंत्रालय भारत सरकार नई दिल्ली के अभिलेख राष्ट्रीय एवं राज्य स्तरीय पुस्तकालय, इंटरनेट एवं समाचार पत्र-पत्रिकाओं एवं अन्य प्रासंगिक सामग्रियों का अध्ययन किया गया है ताकि शोध के निष्कर्ष पर पहुंचा जा सके।

परिकल्पना :

शोध कार्य को सही दिशा एवं उचित निष्कर्ष पर पहुंचने के लिए परिकल्पना का महत्वपूर्ण स्थान होता है। इस शोध कार्य में निम्नलिखित परिकल्पना प्रस्तावित है:

- भारत अपने एक्ट ईस्ट नीति को कार्यान्वित करने के लिए प्रतिबद्ध है।
- भारतीय विदेश नीति सहयोग एवं समन्वय की भावना पर आधारित है।
- दक्षिण-पूर्व एशिया में भारत अपनी आर्थिक स्थिति को मजबूत कर रहा है।

निष्कर्ष :

आसियान क्षेत्र में मलेशिया भारत का सबसे बड़ा व्यापार भागीदार है। आर्थिक एवं व्यावसायिक हित भारत-मलेशिया संबंधों की आधारशिला कही जाती है। दोनों देश शिक्षा, मानव संसाधन, विकास, संचार व सूचना प्रौद्योगिकी, प्रतिरक्षा, पर्यटन, संस्कृति जैसे क्षेत्रों में मिलकर काम कर रहे हैं। भारत और मलेशिया ने अपने राजनीतिक संबंधों के 65 साल पूरे कर लिए हैं ।दोनों देशों के बीच निवेश की काफी संभावनाएं है। दोनों देश आर्थिक गति को बाधित करने वाली समस्याओं को दूर कर मजबूत व्यापारिक संबंध को स्थापित कर सकते हैं।

सन्दर्भ :

1. इमर्जिंग डायनेमिक्स इन कंटेम्परारी इंडिया–मलेशिया रिलेशनस, रविचंद्रन मूर्ति एंड सरजीत एस गिल।
2. विदेश मंत्रालय, भारत सरकार।

3. वाणिज्य विभाग, भारत सरकार।
4. आईबीईएफ.ओआरजी ।
5. प्रेस इंफोर्मेशन ब्यूरो, गवर्नमेंट आफ इंडिया ।
6. विदेश मंत्रालय, भारत सरकार।
7. इंडिया एंड मलेशिया, सुरंजन दास, के. डब्ल्यू पब्लिशर्स।
8. इंडिया एंड मलेशिया, इंटरट्विनड स्ट्रैंडस, वीणा सिकरी।